अध्ययन सामग्री
एम॰ ए॰ सेमेस्टर 2
CC IX UNIT 3
डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
एच॰ डी॰ जैन कॉलेज
वी॰ कुं॰ सिं॰ वि॰, आरा

उत्तररामचरितम्

06.04.20

'उत्तररामचरितम्' नाटक के कथानक के मूल स्रोत एवं परिवर्तनों पर प्रकाश डालिए।

'उत्तररामचरितम्' का कथानक वाल्मीकीय रामायण के कथानक पर आश्रित है। 'उत्तररामचरितम्' नाटक का उपजीव्य ग्रन्थ 'रामायण' है। भवभूति ने अपने नाटक में विशिष्टता लाने हेतु उपजीव्य के कथांश में अनेक परिवर्तन किए हैं। महाकवि भवभूति ने मूलकथा का ज्यों-का-त्यों अनुकरण नहीं किया है, क्योंकि उसे नाटकीयता प्रदान करने के लिए उसमें कुछ परिवर्तन करना आवश्यक था। निःसन्देह उनकी प्रतिभा के सहयोग से 'उत्तररामचरितम्' का कथानक एक नवीन रूप में अवतीर्ण हुआ है।

रामायण के उत्तरकाण्ड में रावण वध के अनन्तर राम का राज्याभिषेक होता है, वे अयोध्या में राज करते हैं तभी प्रजा के द्वारा सीता के चरित्र के सम्बन्ध में आक्षेप किए जाने पर राम उन्हें वन की शोभा दिखाने के बहाने वाल्मीकि आश्रम पर छोड़ देते हैं, जहाँ गर्भिणी सीता लव-कुश को जन्म देती है। राम के अश्वमेध के समय महर्षि वाल्मीकि लव-कुश के साथ यज्ञभूमि में पधारते हैं। लव-कुश द्वारा रामचरित का गायन होने पर राम

उन्हें पहचानकर सीता को ग्रहण करने की अभिलाषा करते हैं, किन्तु लोकापवाद के संकोचवश सीता से सतीत्व परीक्षा का प्रस्ताव करते हैं। सीता इस प्रस्ताव से अपने को अपमानित अनुभव कर पाताल में पृथ्वी माँ की गोद में प्रविष्ट हो जाती है।

भवभूति ने रामायण की कथा में निम्नलिखित परिवर्तन किए हैं —

1) वाल्मीकीय रामायण में रामकथा दुःखपर्यवसायी कथा है, क्योंकि उसका अन्त राम के द्वारा परित्यक्ता जानकी के पातालगमन से ही होता है। परन्तु भवभूति ने नाट्य परम्परा का अनुकरण कर उत्तररामचरित को सुखान्त रूपक बनाया है। राम-सीता तथा लव-कुश आदि के सुखद मिलन के साथ नाटक समाप्त होता है।

2) प्रथम अंक में 'चित्रवीथी' की कल्पना कवि के उर्वर मस्तिष्क की उपज है। मूलकथा में उसका उल्लेख नहीं है। इस प्रयोग से राम के उत्तर चरित के साथ पूर्व चरित को भी संयोजित कर दिया गया है।

3) शम्बूक की कथा यद्यपि 'रामायण' में भी मिलती है, परन्तु 'उत्तररामचरितम्' के द्वितीय अंक में वह एक नये रूप में प्रस्तुत की गयी है, जिससे राम पंचवटी में पहुँच सकें।

4) तृतीय अंक में 'छाया' सीता की कल्पना तो कवि की पूर्णतया मौलिक सूझ है। 'छाया' सीता की अवतारणा नाटकीय दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। राम का पंचवटी में वन देवी वासन्ती से मिलना भी कवि की अपनी उद्भावना है। इस पात्र की कल्पना से कवि ने दर्शकों के सामने राम के हृदय का सच्चा चित्र रखने में अपूर्व सफलता प्राप्त की है।

5) चतुर्थ अंक में वशिष्ठ, अरुन्धति, जनक आदि को वाल्मीकि आश्रम में एकत्रित करना भी कवि का कल्पना-कौशल ही है।

6) रामायण की कथा में यज्ञाश्व चुराने के प्रसंग में राम और लव-कुश का युद्ध वर्णित है और उसमें राम की पराजय भी दिखायी

गयी है, परन्तु भवभूति ने बड़ी ही कुशलता से अपने नायक की मान रक्षा की है। उन्हें इस असमंजसकारी परिस्थिति से बचाया है। 'उत्तररामचरितम्' में युद्ध लव और चन्द्रकेतु में ही दिखाया गया है, जो समन्वय आदि के कारण औचित्यपूर्ण है। युद्ध वर्णन से राम के मंच पर आने में सहायता मिलती है।

7) सातवें अंक में 'गर्भाङ्क' कवि का नूतन प्रयोग है। गर्भाङ्क के द्वारा भवभूति ने मूल कथा को परिवर्तित कर दिया है। सप्तम अङ्क में मूल कथा दुःखान्त है तो उत्तररामचरित की कथा में सीता राम का पुनर्मिलन आयोजित करके भवभूति ने नाटक का सुखान्त पर्यवसान किया है।

कथावस्तु में मौलिक परिवर्तनों से वस्तु-विन्यास बड़ा ही कलापूर्ण बन पड़ा है। महाकवि भवभूति के 'उत्तररामचरितम्' में रामायण के साथ-साथ अन्य स्रोतों को भी आधार बनाया है। महाभारत, ब्रह्मपुराण, विष्णुपुराण, स्कन्दपुराण तथा अग्निपुराण में वर्णित रामकथा का प्रभाव भवभूति पर कम ही परिलक्षित होता है। भवभूति ने पद्मपुराण की कथा को आधार बनाकर अनेक परिवर्तन किए हैं। भवभूति ने अश्व का रक्षक लक्ष्मण के पुत्र चन्द्रकेतु को बनाया है जबकि पद्मपुराण के अनुसार अश्व का मुख्य रक्षक भरत पुत्र पुष्कल है। 'उत्तररामचरितम्' में गंगा एवं पृथ्वी की उदारता से सीता का राम से पुनर्मिलन हुआ है जबकि पद्मपुराण में गंगा और पृथ्वी का कोई कृतित्व नहीं है।

पद्मपुराण के अतिरिक्त भवभूति ने उत्तररामचरितम् में कतिपय घटनाओं का आधार विष्णुपुराण को भी बनाया है। उत्तररामचरित के प्रथम अंक में दशरथ पुत्री शान्ता तथा रोमपाद को दत्तक पुत्री के रूप में दिये जाने का वर्णन विष्णुपुराण पर आधारित है।

पद्मपुराण के पातालखण्ड में राम के सीता त्याग, अश्वमेध यज्ञ, वाल्मीकि आश्रम में अश्वमेधाश्व का लव-कुश द्वारा पकड़ा जाना और वाल्मीकि द्वारा राम को उनका परिचय कराना तथा अन्त में राम-सीता मिलन दिखाया है। भवभूति पद्मपुराण से परिचित हैं किन्तु उन्होंने इसमें पर्याप्त परिवर्तन किए हैं - यथा - जृम्भक अस्त्रों का लव-कुश में स्वतः प्रकट होना, लव का बन्दी न होना, सीता का अयोध्या न जाना वरन् वाल्मीकि आश्रम में ही राम के द्वारा सीता का ग्रहण आदि परिवर्तनों के द्वारा भवभूति ने रामायण और पुराण में वर्णित रामकथा को नाटकीयता एवं उत्कर्ष प्रदान किया है। नाटक को कलात्मकता प्रदान करने में कवि को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। जहाँ तक करुण रस की मार्मिक एवं सफल व्यंजना की बात है, यह भवभूति की मौलिक सृष्टि है। मूल स्रोत से कथा लेकर भवभूति ने उसे नाटकीय रूप में सज्जित करने में अपने पाण्डित्य एवं प्रतिभा का परिचय दिया है और वे इस कृतित्व के कारण संस्कृत के नाटककारों में विशिष्टता को प्राप्त हो गये हैं - 'उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते' - यह उक्ति उनकी कृति की समुचित प्रशंसा कही जा सकती है।